श्री समवसरण एवं नवगृह मंदिर, बामनवाड़

यह शिखरबंद मंदिर मूल मंदिर के दांई ओर स्थित है। इसको नवगृह मंदिर भी कहा जाता है। मंदिर के मूलनायक श्री भगवान चारों ओर श्री वासुपूज्य स्वामी पदमप्रभ स्वामी, श्री मुनिसुव्रत स्वामी, श्री चंद्रप्रभ स्वामी, श्री सुविधिनाथ, श्री पार्श्वनाथ, श्री नेमिनाथ व अन्य तीर्थंकर की प्रतिमा ग्रहों के अनुरूप प्रतिष्ठित है।

इस मंदिर की प्रतिष्ठा आचार्य श्री पद्सागर सूरीश्वर जी म.सा. द्वारा वि.सं. 2063 (सन् 2008) में सम्पन्न हुई।

यह भव्य मंदिर समवसरण जिन मंदिर अंबाजी मार्बल व विशिष्ठ कोतरणी में वांकली वाले प्रायः कोठारी परिवार द्वारा बनवाया गया ।

महावीर भगवान ने श्री गौतम स्वामी आदि ग्यारह गणधर को वैशाख शुक्ला 11 को दीक्षीत कर शासन संघ की स्थापना की । इस तिथि को शासन स्थापना दिन ध्वजारोहण व देववंदन आदि के द्वारा मनाना चाहिए ।

श्री महावीर भगवान का उपसर्ग मंदिर, बामनवाड़

मूल मंदिर के प्रवेश के दांई ओर एक मंदिर बना है जहां पर भगवान महावीर के कानों मे कीले लगाऐ थे, वैद्य द्वारा कीले निकालने पर जो चीख हुई उसकी आवाज से पहाड़ी में तड़ (टूटने की लाईन) आ गई जो आज भी विद्यमान है।

समवसरण मंदिर के आगे एक टेकरी (छोटी पहाड़ी पर) उपसर्ग बना हुआ है। यहां पर चरण–पादुका बने हैं, ऊपर की मंजिल में मंदिर बनाया गया है।

इस सम्बन्ध में तपागच्छ पट्टावली के अनुसार वि.सं. 1300 के लगभग अचलगच्छीय आचार्य श्री महेन्द्रसूरि जी द्वारा रचित अष्टोत्तरी तीर्थमाला में वीर प्रभु के चरण होने का उल्लेख है।

इसी प्रकार वि.सं. 1750 में, पं. श्री सौभाग्य विजयजी द्वारा रचित तीर्थ माला में यहां पर वीर प्रभु के चरणों का उल्लेख है।

मूल मंदिर के पीछे की टेकरी पर सम्मेतशिखर तीर्थ की रचना की है। इसके छोटा सम्मेशिखर भी कहा जाता है। जो व्यक्ति किसी कारणवश मूल तीर्थ के दर्शन करने नहीं जा सकता वह यहाँ आकर दर्शन कर अपने आप को धन्य समझता है। पहाड़ी पर सम्मेतशिखर तीर्थ की छोटी छोटी टूंक बनी हुई है। ऊपर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इसी पहाड़ी पर श्री पार्श्वनाथ भगवान का छोटा सुंदर मंदिर है।

इसी पहाड़ी पर योगीराज श्री शांतिसूरि जी का ध्यान केन्द्र बना हुआ है जहाँ आचार्य श्री अपना ध्यान तप किया करते थे। यहाँ पर शांतिसूरि जी की प्रतिमा है।

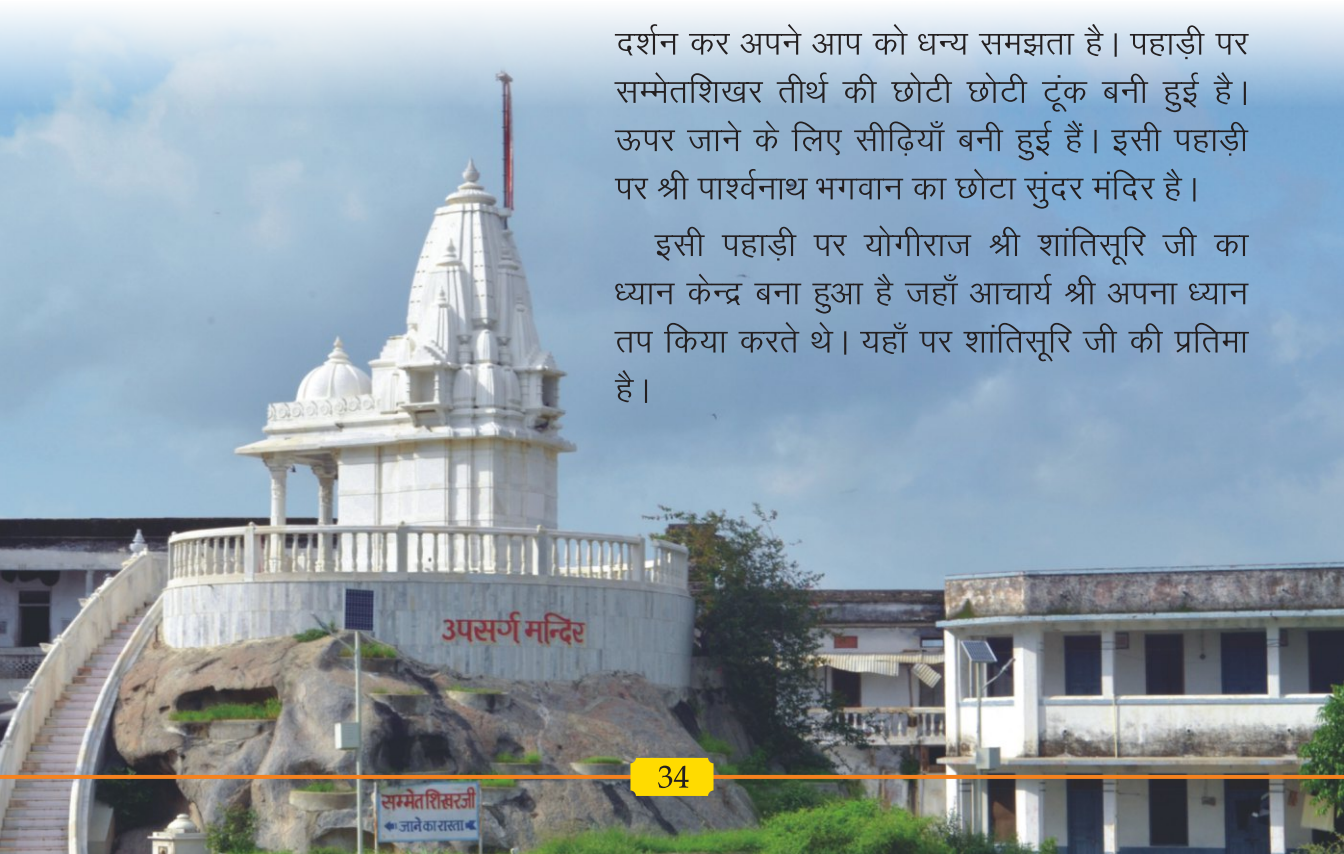

श्री आदिनाथ भगवान एवं आगम मंदिर, बामनवाड़

यह 72 जिनालय शिखरबंद मंदिर भीतर भोजनशाला के पास से बना मार्ग द्वारा आया जाता है व मंदिर के बाहर बनी होटल रेस्टोरेंट के पास से मार्ग जाता है। मंदिर में मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान व दोनों ओर सीमंधर स्वामी व नेमिनाथ भगवान की प्रतिमाएं स्थापित है।

मूल मंदिर के तीनो ओर 64 देवरिया बनी हुई है। यह 72 जिनालय का बना हुआ है। मूल गभ्भारा के सामने श्री पुण्रीकस्वामी की प्रतिमा स्थापित है। तीनों ओर स्वण अक्षर से लिखित 45 आगम के पट्ट लगे हुए हैं।

इस मंदिर की प्रतिष्ठा आचार्य श्री अशोक सागरसूरीश्वर जी म.सा. द्वारा वि.सं. 2068 (दिनांक 12.03.2012) को कराई गई।

मंदिर की ओर यात्रियों की सुविधा के लिए धर्मशाला, भोजनशाला, जलगृह बना हुआ है।

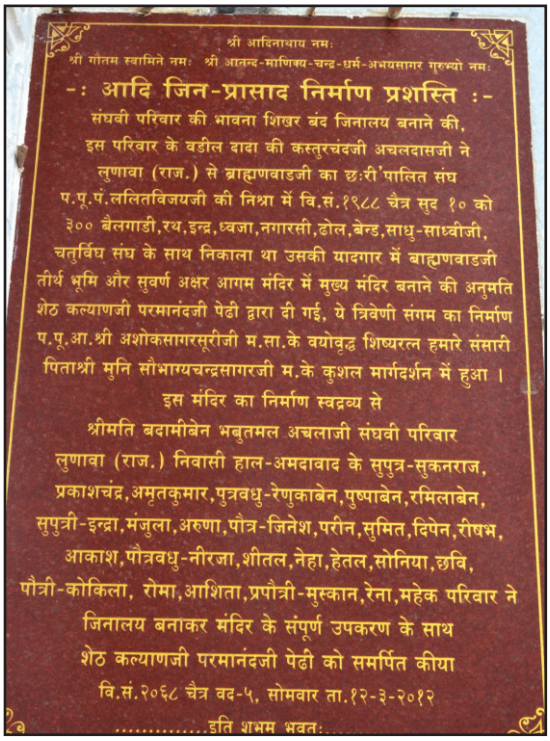

साधु–साध्वियों के लिए पृथक–पृथक उपाश्रय बने हुए हैं।

इस मंदिर की देखरेख के लिए श्री कल्याणजी परमानंद जी की पेढ़ी सिरोही द्वारा की जाती है। यह पेढ़ी सिरोही की शाखा है। मंदिर के प्रथम प्रवेश द्वार (प्रवेश करते हुए बाएं) एक नूतन आगम मंदिर निर्मित हुआ है जिसके 45 आगमों के पट्ट बने हुए है इसमें अतीत, अनागत, वर्तमान तीर्थंकरों की देवरिया है। सम्पर्क सूत्र : 02971–20056

मंदिर के पास ही धारेश्वर महादेव का वि.सं. 1112 का बना हुआ है। इसी प्रकार मंदिर के पीछे करीब 2 किलोमीटर दूर प्राचीन अम्बामाता का मंदिर है। जहाँ माता की पूजा नहीं होती । वरन् चक्र की पूजा होती है।

यह मंदिर धार्मिक सहिष्णुता का एक ज्वलंत उदाहरण है।

अरिहंत के चरण कमलों की सेवा

सद्गुरु के चरणों की पर्युपासना, स्वाध्याय एवं धर्मवाद में श्रेष्ठता प्रभु पुण्य के योग से प्राप्त होती है।

श्री तीर्थेन्द्रसूरिजी गुरु मंदिर

यह मंदिर श्री शंखेश्वर जी पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर के पास ही स्थापित है। मंदिर में श्री सरस्वती देवी वह महालक्ष्मी की प्रतिमा स्थापित है।

यह मंदिर मूल मंदिर के प्रवेश द्वार के सामने की ओर स्थित है। इसकी देखरेख बाहरी संस्था द्वारा की जाती है (संस्था का नाम ज्ञात नहीं हो सका)

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर – बामनवाड़जी

यह शिखरबंद नूतन मंदिर है। मूलनायक के दोनो ओर श्री श्रेयांसनाथ व श्री सुमतिनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित है। बाहर ही आदिनाथ व श्री महावीर भगवान की प्रतिमा स्थापित है।

यह मंदिर मूल मंदिर के प्रवेश द्वार के सामने की ओर स्थित है।

मंदिर की देखरेख बाहरी संस्था द्वारा की जाती है।

श्री कमल विजय जी म.सा. गुरू मंदिर

श्री कमलविजय जी म.सा. का गुरू मंदिर निर्माणधीन है जिसका निर्माण श्री ललित विजय जी म. सा. की निश्रा में हो रहा है।

यह मंदिर मूल मंदिर के प्रवेश द्वार के सामने की ओर स्थित है। बाहरी संस्था द्वारा मंदिर की देखरेख की जाती है।

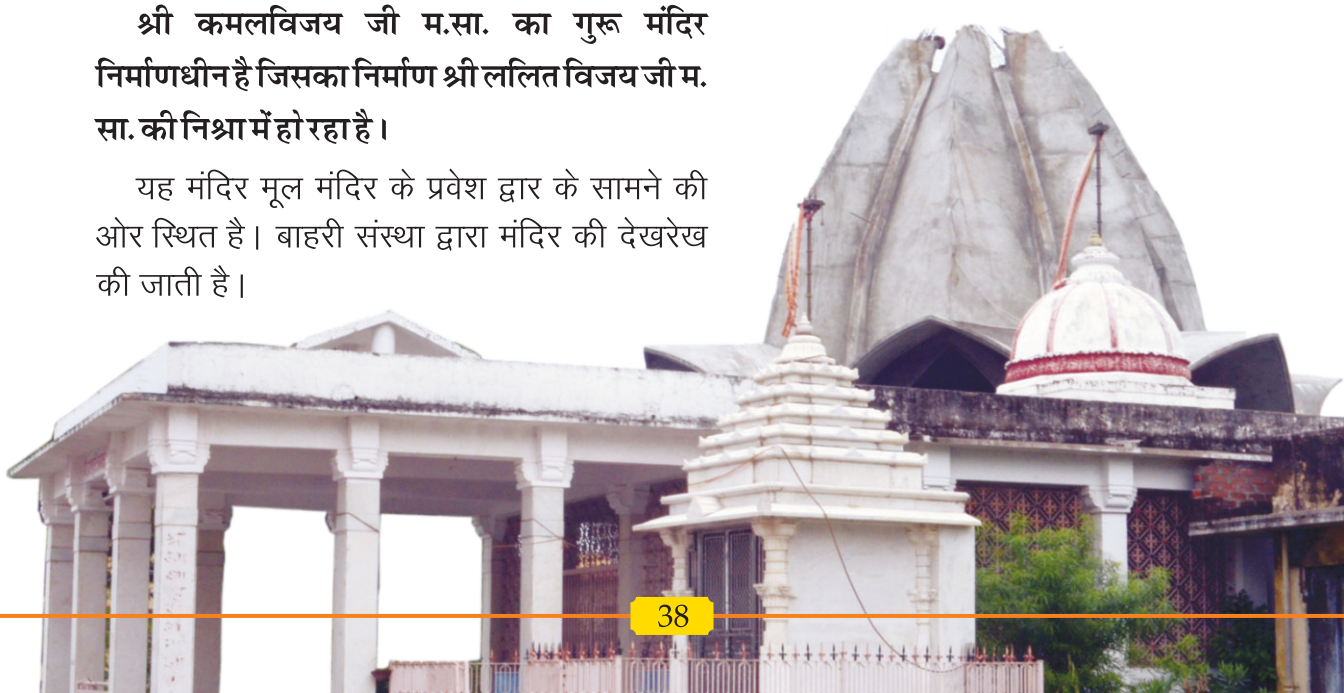

श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर

यह तीर्थ बामनवाड़ा जी तीर्थ के पास दूसरी ओर अर्थात् मुख्य सड़क के किनारे स्थित है। यह मंदिर रथ पर बना हुआ है जिस पर 6 पहिए व दो घोड़े बने हुए है। यह नूतन मंदिर है। जिसकी प्रतिष्ठा 29 अप्रेल, 2007 को दीक्षा दानेश्वरी आचार्यदेव श्री गुणरत्न सुरीश्वरजी म.सा. द्वारा सम्पन्न हुई।

इसको रथ मंदिर भी कहा जाता है। बेड़ा वाला परिवार पींडवाड़ा में रहते हैं। उनके द्वारा स्वद्रव्य से बनाया गया है। यहां से उन्दरा मंदिर 2 किमी दूर है। स्व द्रव्य से मंदिर निर्माण लाभ शा. भूरमलजी सुरेशजी, प्रकाशजी, जसवंतजी बेड़ावाला परिवार, पींडवाड़ा।

श्री महावीर भगवान का मंदिर, उंदरा

यह शिखरबंद मंदिर सिरोही मुख्यालय से 17 किलोमीटर व सिरोही रोड स्टेशन से 10 किलोमीटर व बावनवाड़ तीर्थ से 2 किलोमीटर दूर कच्चे मार्ग पर गाँव के बाहर एक किलोमीटर दूर स्थित है। इस मंदिर का बहुत प्राचीन होना बताया गया है। लेकिन ऐसा कोई प्रमाणिक तथ्य स्पष्ट नहीं मिला। मंदिर की बनावट के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि मंदिर प्राचीन है। उल्लेखानुसार प्राचीन मूलनाय की प्रतिमा पर वि. सं. 1235 का लेख उत्कीर्ण था।

मूलनायक पर वि.सं. 1499 फा. वदि 5 का लेख है। मंदिर जीर्णाद्धार का भी लेख मूल मण्डप के सम्मुख भाग के पास के पाट पर वि.सं. 1489 माह सुदि 13 का है। जिस पर प्रागवाट सा., लालशाह भार्या, नामलदे आदि ने बनवाया और श्री सोम सुंदर सूरिजी ने प्रतिष्ठा कराई। इसका प्राचीन नाम उपनपट्ट था । उंदरा ग्राम से 0.1 किलोमीटर की दूर पर पहाडी की तलहटी पर किलानुमा परकोटा है जिसके भीतर यह मंदिर स्थापित है।

इस मंदिर में उपाश्रय है। मंदिर के साथ जमीन है जिस पर कृषि हो रही हैं। मूलनायक की प्रतिमा प्राचीन सनवाड़ा ग्राम जो खण्डित हो गई वहां से लाकर यहां स्थापित की थी।

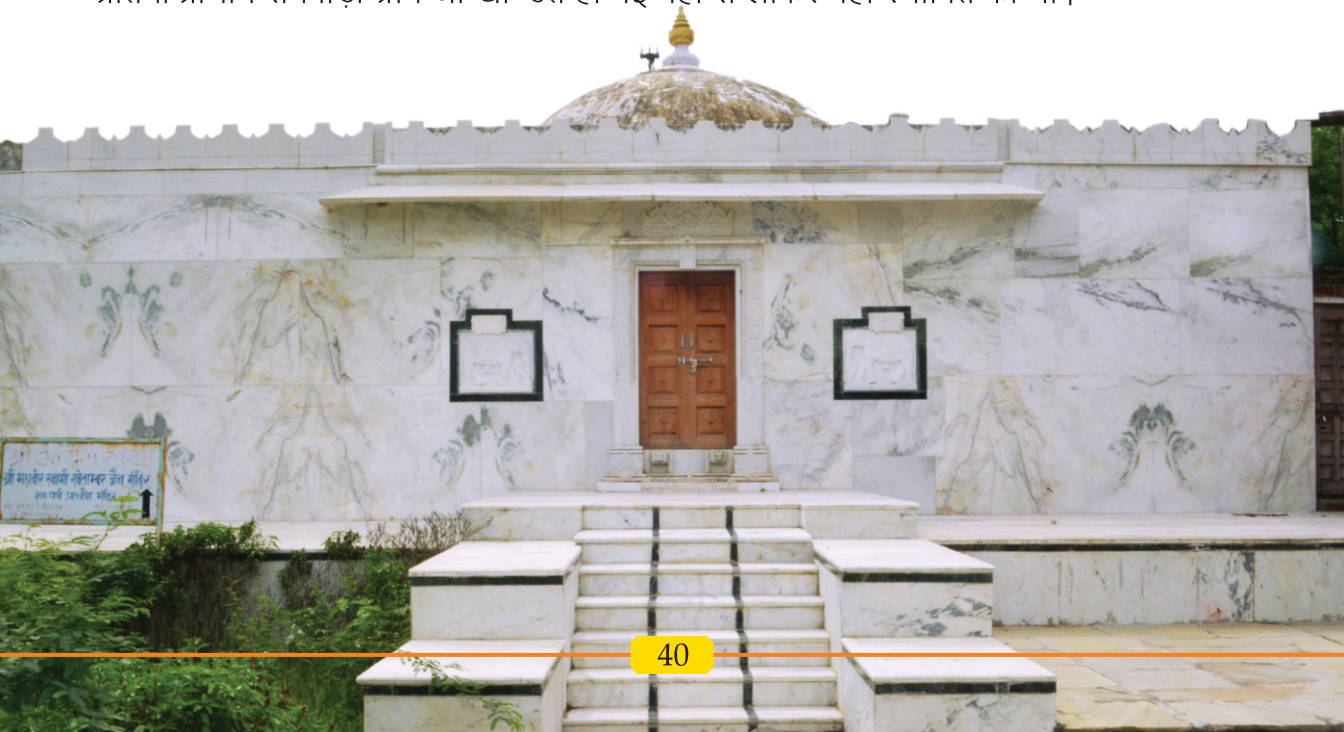

बामनवाड़ जी तीर्थ से इस मंदिर तक आने के लिए कोई नियमित साधन नहीं है।, अपने स्वयं के साधन से जाया जा सकता है।

इस मंदिर में रंगमण्डप, सभामण्डप, नवचौकी है।मंदिर की देखरेख सिरोही की कल्याणजी, परमानंद जी पेढ़ी द्वारा की जाती है। लेकिन सारी व्यवस्था इस पेढ़ी की शाखा बामनवाड़ जी द्वारा की जाती है।

यह मंदिर किन्ही कारणों से मूर्ति विहिन हो गया था तो जूना साणवाड़ा के खण्डित मंदिर में से मूर्ति बामनवाड़ जी ले गए वहां से यहां लाकर स्थापित कर दी गई। यह लेख मंदिर में प्रतिमा स्थापित व प्रतिष्ठा को स्पष्ट करता है।

मंदिर में वि.सं. 1265 का लेख है। मंदिर में श्री नेमिनाथ भगवान, श्री शांतिनाथ भगवान, श्री सुमतिनाथ भगवान, श्री कुथुंनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित है।

सम्पर्क सूत्र : 02971–220056

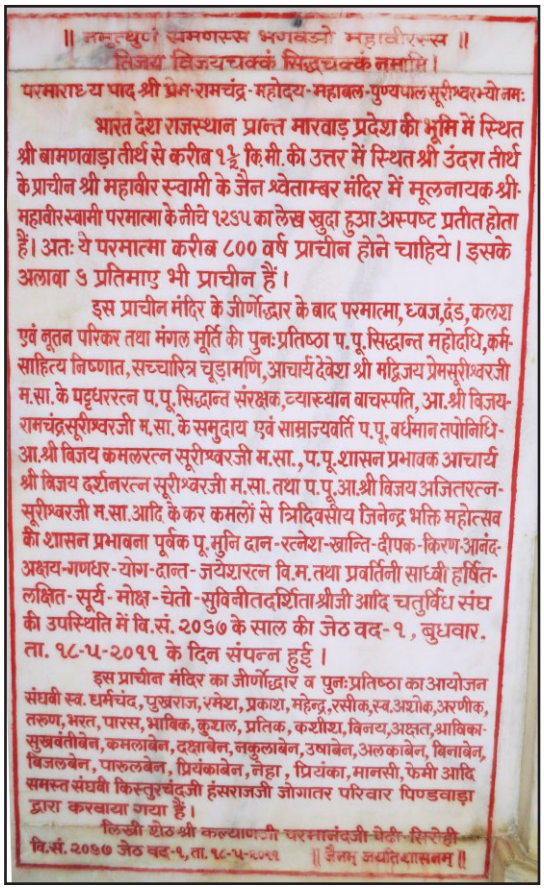

॥ नमुत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥
तिजय विजयचक्कं सिद्धचक्कं नमामि ।

परमाराध्य पाद श्री प्रेम-रामचंद्र-महोदय-महाबल-पुण्यपाल सूरीश्वरभ्यो नमः

भारत देश राजस्थान प्रान्त मारवाड़ प्रदेश की भूमि में स्थित श्री बामणवाड़ा तीर्थ से करीब १½ कि.मी. की उत्तर में स्थित श्री उंदरा तीर्थ के प्राचीन श्री महावीर स्वामी के जैन श्वेताम्बर मंदिर में मूलनायक श्री-महावीरस्वामी परमात्मा के नीचे १२७५ का लेख खुदा हुआ अस्पष्ट प्रतीत होता हैं। अतः ये परमात्मा करीब ८०० वर्ष प्राचीन होने चाहिये। इसके अलावा ७ प्रतिमाए भी प्राचीन हैं।

इस प्राचीन मंदिर के जीर्णोद्धार के बाद परमात्मा, ध्वज,दंड, कलश एवं नूतन परिकर तथा मंगल मूर्ति की पुनःप्रतिष्ठा प.पू.सिद्धान्त महोदधि,कर्म-साहित्य निष्णात,सच्चारित्र चूड़ामणि,आचार्य देवेश श्री मद्विजय प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. के पट्टधररत्न प.पू.सिद्धान्त संरक्षक,व्याख्यान वाचस्पति, आ.श्री विजय-रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. के समुदाय एवं साम्राज्यवर्ति प.पू.वर्धमान तपोनिधि-आ.श्री विजय कमलरत्न सूरीश्वरजी म.सा., प.पू.शासन प्रभावक आचार्य श्री विजय दर्शनरत्न सूरीश्वरजी म.सा. तथा प.पू.आ.श्री विजय अजितरत्न-सूरीश्वरजी म.सा.आदि के कर कमलों से त्रिदिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव की शासन प्रभावना पूर्वक पू.मुनि दान-रत्नेश-क्षान्ति-दीपक-किरण-आनंद-अक्षय-गणधर-योग-दान्त-जयेशरत्न वि.म.तथा प्रवर्तिनी साध्वी हर्षित-लक्षित-सूर्य-मोक्ष-चेतो-सुविनीतदर्शिताश्रीजी आदि चतुर्विध संघ की उपस्थिति में वि.सं. २०६७ के साल की जेठ वद-१, बुधवार. ता. १८-५-२०११ के दिन संपन्न हुई।

इस प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार व पुनःप्रतिष्ठा का आयोजन संघवी स्व. धर्मचंद, पुखराज, रमेश, प्रकाश, महेन्द्र, रसीक, स्व.अशोक, अरणीक, तरूण, भरत, पारस, भाविक, कुशाल, प्रतिक, कशीश, विनय, अक्षत, शाविका-सुखवंतीबेन, कमलाबेन, दक्षाबेन, नकुलाबेन, उषाबेन, अलकाबेन, बिनाबेन, बिजलबेन, पारुलबेन, प्रियंकाबेन, नेहा, प्रियंका, मानसी, फेमी आदि समस्त संघवी किस्तुरचंदजी हंसराजजी जोगातर परिवार पिण्डवाड़ा द्वारा करवाया गया है।

लिखी शेठ श्री कल्याणजी परमानंदजी पेढ़ी-सिरोही

वि.सं. २०६७ जेठ वद-१, ता. १८-५-२०११ ॥ जैनम् जयतीशासनम् ॥

मंदिर की प्राचीनता के प्रमाणीकरण के लेख

मूलनायक श्री महावीर भगवान के पीछे–आगे का लेख

(1) (सं0) 1499 फा0 व0 5.... ....(ब्रां)हणवाडाग्रामे निजोद्धृप्रासादे श्रीः।।

महावीर.... ....

(2) श्रीमहावीर खींदा जाणा हा0 ....

मंदिर के गूढ़मण्डप के सामने पाट के ऊपर का लेख

सं0 अ1489 वर्षे महा सुदि 13 दिने प्राग्वाटज्ञातीय सा0 ललतपाल भा0 नामलदे पुत्र सा0 सोहव भा0 सोढी तत्पुत्र श्रीतीर्थय.... धर्मकर्मकारक सा0 षीमा भा0. गोरी तत्पुत्रेण दृढ़श्रीदेवगुरूभावितांतःकरणेन प्रौढ़श्रीविभवाकरणप्रवीणेन सा0 पुंजाकेन भा0 सोहगसुश्रावक सा0 सामंत सं0 घोलासण व्य0 कामण सा0 ....र्व्वाण–डाहा....ज.....पुत्र सा0 सूरा सीहापुत्रिका बाई वाल्हीप्रमुखकुटुंबयुतेन ऊंदिराग्रामे स्वश्रेयोर्थं.....श्रीवर्द्धमानजिनप्रतिमासमलंकृतः प्रौढ़प्रासाद(:) कारितः प्रतिष्ठितः श्रीमत्तपागच्छाधिराज श्रीसोमसुंदरसूरिभिः।।

नाँदियां ग्राम का इतिहास

यह विशाल शिखरबंद बावन जिनालय मंदिर है। इस मंदिर का प्राचीन नाम नन्दीग्राम, नदिवर्धनपुर, नान्देशपुर आदि का उल्लेख है। यह मंदिर महावीर भगवान के बड़े भाई नन्दीवर्द्धन द्वारा बनाए जाने का उल्लेख है। महावीर भगवान अपने छद्मस्थ समय में इस क्षेत्र में विचरण में जीवत स्वामी मंदिर प्रतिष्ठित है। इसकी पुष्टि के लिए मूंडस्थल के जैन मंदिर से वि.सं. 1216 का लेख स्पष्ट है कि महावीर स्वामी छद्मस्थ अवस्था में अर्बुद क्षेत्र में विचरण किया था और केशी श्रमण से मंदिर की प्रतिष्ठा कराई।

यह मंदिर सिरोही रोड रेल्वे स्टेशन से 12, बामनवाड़ से 5 किलोमीटर सड़क के बाईं ओर मुख्य सडक के वहाँ दरवाजे में प्रवेश कर के जाना होता है।

महावीर भगवान के आठवें पट्टधर श्री महागिरिसूरि, सुहस्तिसूरि के समय सम्राट सम्प्रति द्वारा शत्रुंजय, शंखेश्वर, सम्मेतशिखर, बामनवाड़ नंदिया आदि तीर्थों की वर्ष में चार बार यात्रा करते थे। तात्पर्य यह है कि यह तीर्थ प्रमुख तीर्थों में गिना जाता है। आज भी यह मारवाड़ की छोटी पंचतीर्थों में सम्मिलित है।

सिरोही के राव सुरतण जो सम्राट अकबर से लोहा लेता रहा और अधीनता स्वीकार नहीं की यह उसकी गृह स्थली रही।

श्री महावीर भगवान का मंदिर, नादियाँ

यह विशाल शिखरबंद मंदिर ग्राम से एक फलांग दूर पहाड़ की तलहटी में स्थित है। इस मंदिर को नांदीश्वर चेत्य के नाम से जाना जाता है। इसके पास ही महावीर भगवान के चरणपादुका का शिखरबंद मंदिर स्थापित है।

मंदिर में महावीर भगवान की प्रतिमा आकर्षक व कलात्मक है। परिकर कलात्मक है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रतिमा गुप्तकालीन है।

कल्पसूत्र की सुबोधिका टीका के अनुसार भगवान महावीर अपने छद्मस्थ अवस्था में ''लाठ एवं राठ'' (लाठ = गुजरात, राठ–अर्बुद क्षेत्र) क्षेत्र में अपने चौथे व पांचवे चतुर्मास के बीच विचरण करते समय नांदिया में ''चण्डकोशिक'' नाग ने डसा था। नांदिया उपसर्ग स्थल है। आज भी चट्टान पर नाग का स्थान भगवान के

चरण पादुका उत्कीर्ण है। इस स्थान पर वर्तमान में छोटा शिखरबंद मंदिर निर्मित हो गया है।

महावीर भगवान के मंदिर के स्तम्भ पर वि.सं. 1130 एवं 1210 के शिलालेख है तथा प्रतिमा उस समय की प्राचीन है। तथा वि.सं. 1130 में नंदियकचैत्य में बावड़ी खुदवाई थी तथा वि.सं. 1201 में इस मंदिर का जीर्णोद्धार होने का उल्लेख मिलता है। इस आधार पर यह मंदिर 2600 वर्ष प्राचीन है।

ग्राम में तीन मंदिर स्थापित है। जिसमें से दो महावीर भगवान के है। मंदिर में प्रवेश के समय रायण वृक्ष की रचना है, श्रृंगार चौकी है। बाहर दाईं ओर दीवार के एक पत्थर पर ''सं. 1130 वैशाख सुदि 13 का लेख है जिसमें ''नदियाचेत्य गृह में शिवगण नाम के श्रेष्ठि ने बावड़ी बनाई ऐसा उल्लेख है लेकिन वर्तमान में वह नहीं है।

यह मंदिर वास्तव में किसने बनवाया जिसका प्रमाणिक तथ्य उपलब्ध नहीं है लेकिन सभामण्डप के एक स्तम्भ पर सं. 1201 भादवा सुदि 10 सोम का जीर्णोद्धार का लेख है इससे यह स्पष्ट है कि यह पूर्व का है। मंदिर में विराजित महावीर भगवान की प्रतिमा के दर्शन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि साक्षात भगवान विराजित है जो वृद्धावस्था सी लगती है। जबकि दियाणा में विराजित प्रतिमा युवा–अवस्था की रूप में दर्शन होते है। इस प्रकार से वैराग्य दर्शन अन्य प्रतिमाओं में नहीं दिखाई देता।

श्री महावीर भगवान का उपसर्ग मंदिर, नांदिया

मंदिर के पास एक शिखरबंद देवरी है। ऐसा कहा जाता है कि इसी स्थान पर चण्डकोशिया नाग ने भगवान को डसा था जहां पादुका जोड़ी स्थापित है इसके पास साँप की बाबी की आकृति खुदी हुई है। इस आकृति को किसी ने नहीं बनाई सर्पदंश घटना की आकृति पर प्राचीन लिपि का 7-8 अक्षरों का एक लेख विद्यमान है।

मंदिर में धर्मशाला उपलब्ध है, भोजनशाला नहीं है। मंदिर की देखरेख श्रीवर्धमान आनन्द जी देरासर पेढ़ी नांदिया द्वारा की जाती है। परमात्मा के जीवित समय की प्रतिमा यहाँ विद्यमान है।

शत्रुंजय तीर्थ का 15 वां उद्धार कराने वाले श्रेष्ठी श्री जावड़शाह की जन्म स्थली है।
सम्पर्क सूत्र : 02971–233416

मंदिर की प्राचीनता के प्रमाणीकरण के लेख

महावीर भगवान के प्राचीन मंदिर के श्रृंगार चोकी के बाहर दांई ओर एक पत्थर पर लेख

संवतू(त्) 1130 वैसाष सुदि 13 नंदियक चैत्यहा(ह)र वापी निर्मापिता सिवगणे(न)।

सभामण्डप के स्तम्भ का लेख

संवतृ 1201 भाद्रवा सुदि 10 सोमदिने।।
नींबा भेपाभ्यां वुहुं सीतिणि था....थांभ 2 ।।

शांतिनाथ भगवान के मंदिर में एक छोटी पार्श्वनाथ की मूर्ति का लेख

धानेराग्रामे थारा0 गच्छे श्रीपूर्वसूरिसंताने वोसरि सोच्छिविभ्यां कारिता सं0 1210 फा(ल्गु)ण सुदि 11।।

महावीर भगवान में अम्बिकादेवी की मूर्ति का लेख

संवत् 1253.... ....कुल 2 देवि.... ....र्या मालश्रेयोर्थं.... ....कारापि.... ....।।

श्रृंगार चौकी के प्रवेश के समय दाईं ओर स्तंभ पर लेख

संवत् 1290 वर्शे पोस सुदि 3 रा(0)उउडसू(सु)त सीहसुत रा0 कम(र्म)णश्रेयोर्थं पुत्र सीमेण स्थंभो(स्तंभः) कारितः।

मंदिर के तीसरी डेरी के दरवाजे पर लेख

सं0 1493 चैत्र वदि 2 चाहडभरया (भार्या) कुंती पुत्र.... ....कारापिता।।

चौथी देवी के दरवाजा पर लेख

संवत् 1493 वर्षे वैसाष(शाख) सुदि 13

शांतिनाथ भगवान के मंदिर में धातु की मूर्ति का लेख

सं0 1521 वर्षे मा0 शु0 13 प्राग्वाटज्ञातीय व्य0 हापा भा0 हीमादे पुत्र व्य0 वीसल भाव0 तील्हू पुत्र व्य0 ऊधरणेन भा(0) राजूसु(श्री) भ्रातृ ढालादियुतेन श्रीवासुपूज्यबिंबं का0 प्र0 तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः।।श्रीः।।

महावीर भगवान के मंदिर के पहली डेरी का उरवाजा का लेख

संवत् 1521 वर्षे भाद्रपद शुदि पडवेदिनै (प्रतिपादिने) नांदियापुरवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय व्य0 दूल्हा भार्या दूली पुत्र व्य0 जूठाकेन भार्या जसमादे भ्रातृ व्य0 मउवा झाला वरजांगषेतादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे। श्रीमहावीरप्रासादे देवकुलिका कारिता।।छ।।

शांतिनाथ भगवान के धातु की मुर्ति का लेख

सं0 1528 वर्षे माघ व0 5 अजाहरीवासिप्राग्वाट व्य0 ऊदाभा0. आनी पु0 व्य0 नीसलेन भा0 अधू पुत्र नलादिकु(टुं)बयुतेन श्रीमुनिसुंव्रतबिंबं का0 प्र0 श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे तपारीलक्ष्मीसागरसूरिराजैः।।

धातु की पंचतीर्थी मुर्ति का लेख

संवत् 1529 वर्षे फा0 वदि 3 सोमे प्रा0 व्य0 भोजाकेन भा0 अछबादे भ्रातृरामादियुतेन भगिनी राणी पुत्र लालाश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं का0 प्र0 तपागछे(च्छे)श श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्षीसागरसूरिभिः।।श्रीर्भवतु।।

महावीर भगवान के दूसरी डेरी के दरवाजे पर लेख

सं0 1529 वर्षे मा0 व0 3 गुरौ दिने। प्राग्वाटज्ञातीय सीदरथाग्रामवास्तव्य.... .... कुअुंबयुतेन श्रीमहावीरप्रासादे देवकुलिका कारिता स्वश्रेयोर्थं श्रीतपागच्छनायकश्रीश्रीरत्नशेखरसूरि.... ....श्रीश्रीश्रीश्रीसोमजयसूरि(भिः)।

शांतिनाथ भगवान के मंदिर में पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति का लेख

समत(संवत्) 15 स 45 का बसाक (वैशाख) सुध(शुदि) 3 राजा सोसी.... ....रमरासाकषे 3 व–श्रीमतलालजी सेवगजी प.... ....राज श्रीजीणाराजमानकलाण.... ....।।

धातु की पंचतीर्थी मुर्ति का लेख

सं0 1595 वर्षे माहसुदि 13 शनै(नौ) प्रा0. व्यव(0) वेला भा0 धनी पु0 नगा भा0 नारगदे पु0 जगा पित्र(तृ)निःमतं(निमित्तं) पार्श्वनाथबिंबं प्रा0 पिप्फलगछे(च्छे) भ0 श्रीदेवप्रभसूरिप्रतिष्टः(ष्ठितं)।

धातु की प्राचीन एक तीर्थी पार्श्वनाथ भगवान की मुर्ति पर लेख

सं0 91 वैशाश सुदि 14 श्रीथारा(पद्र)गच्छे धानेराग्रामे रावाश्रेयोर्थं नागडेन कारिता।

महावीर भगवान के निर्वाण के बाद 993 वर्ष में चौथे कलिकाचार्य से पंचमी के स्थान पर चतुर्थी की संवत्सरी प्रारम्भ की ।

श्री मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर, नांदियां गाँव

यह मंदिर नांदिया ग्राम में नई हवेली जैन धर्मशाला के पास, प्राचीन उपाश्रय के पास स्थित है। इसकी प्रतिमा चवरली नामक ग्राम के जैन मंदिर से वि.सं. 1900 के लगभग में लाने का उल्लेख है। ऐसा प्रतीत होता है कि मंदिर निर्माण के बाद प्रतिमा लाई गई हो।

पार्श्वनाथ भगवान की छोटी पंचतीर्थी प्रतिमा पर वि.सं. 1210 फागुण सुदि 11 का लेख है। और एक अन्य धातु की मूर्ति पर सं. 1521 का लेख है। इससे यह स्पष्ट है मंदिर प्राचीन है।

मंदिर में विशाल गुम्बज, नक्काशीकार, स्तम्भ, रंगमण्डप, सभामण्डप श्रृंगार चौकी आदि बने हैं। पूरा मंदिर कांच से जड़ित है। पूर्व में यह शांतिनाथ भगवान का मंदिर था। ऐसा वर्णन आता है वर्तमान में मुनिसुव्रत भगवान का मंदिर है।

आचार्य श्री प्रेमसूरि जी म.सा. का गुरु मंदिर

इसके पास ही गुरू मंदिर स्थापित है। श्री प्रेमसूरिजी म.सा. की जन्मस्थली है। इस ग्राम में उनका ननिहाल था, जन्म यहां हुआ। पालीताणा के 13वां जीर्णोद्धार श्री जावड़ शाह की जन्मभूमि भी यहीं है। मंदिर के पास एक गली में अधिष्ठायक देव का मंदिर स्थापित है।

विशेष जानकारी : (भगवान महावीर के मंदिर से सम्बन्धित)

''नाणा दियाणा नांदिया, जीवत स्वामी वांदिया''

भगवान महावीर प्रभु के ज्येष्ठ भ्राता श्री नंदिवर्धन महाराजा ने जिस समय भगवान विहार करते थे तब यह बिम्ब भरवाये है। जिससे यह भगवान जीवित महावीर स्वामी के नाम से प्रसिद्ध है। यह प्रतिमा अष्ट प्रतिहार्य युक्त है जिसमें इन्द्राणी पुष्प वृष्टि करते है देव दुदुंभ बजाते है, भामंडल है, छत्र है, अशोक वृक्ष है, धर्मचक्र है, इन्द्र महाराजा भगवान के दोनो तरफ चामर ढोलते है।

यह प्रतिमा क्षत्रियकुंड नगर से हमारे पूर्वजों ने यहां पर लाकर स्थापित की है जिसका इतिहास भी यहां पेढ़ी में मौजूद है। प्रभु की सात हाथी की काया थी उसी प्रकार प्रभु की प्रतिमा है।

भगवान पर चंडकोशिक का सर्पदंश का जो उपसर्ग हुआ था वह भी यहां पर बताया गया है उस जगह पर मंदिर विद्यमान है। मंदिर के बाहर आते ही त्रिमुखी रायण का पेड है जिसे देखकर लोगों में भक्ति की भावना उभरती है।

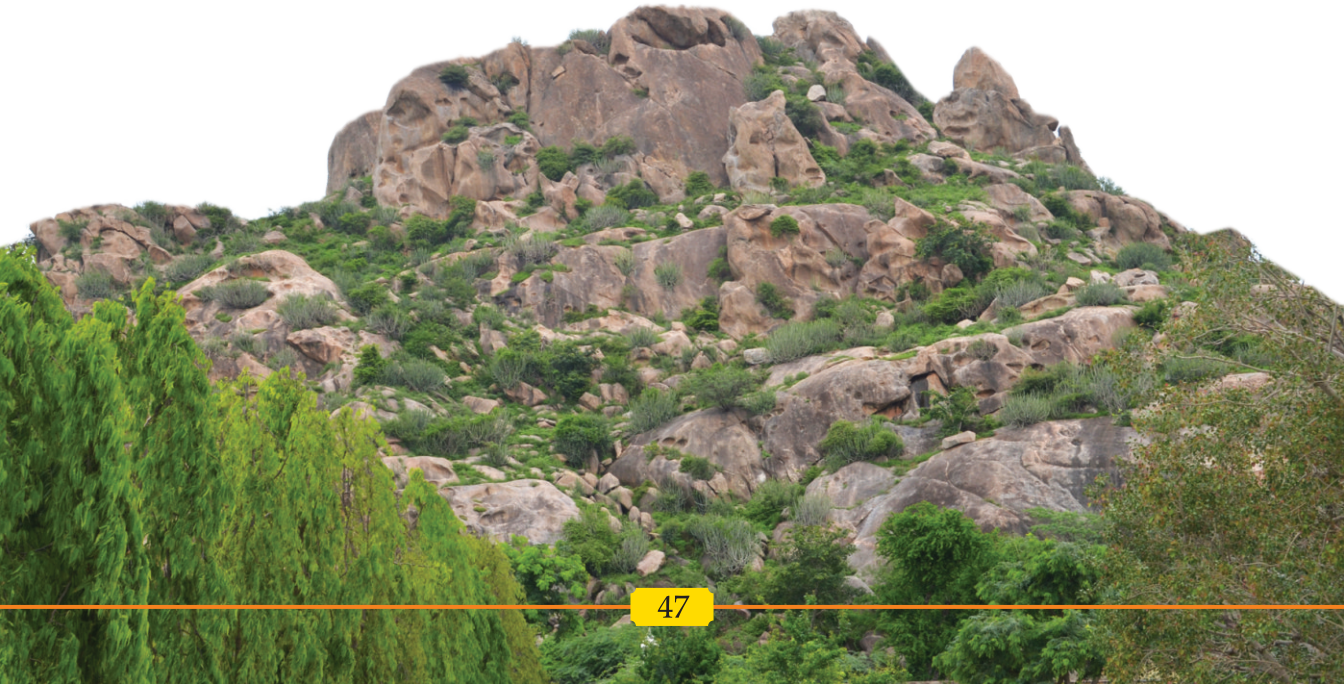

श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर, लोटाणा

यह शिखरबंद मंदिर सिरोही-आबूरोड मार्ग के बीच बामनवाड़ जी तीर्थ के पास नांदिया ग्राम से 6 किलोमीटर दूर एक पहाडी पर विशाल परकोटे के भीतर स्थित है। इस गाँव का प्राचीन नाम शिलालेख के अनुसार लोटीपुर पट्टन और लोटाणक रहा है।

मंदिर की बनावट के आधार पर यह मंदिर 11वीं शताब्दी या इसके पूर्व का निर्मित है। कहा जाता है कि प्रतिमा शत्रुंजय तीर्थ का तेरहवां जीर्णोद्धार के समय से प्राप्त हुई थी। जिसको यहाँ पर प्रतिष्ठित कराई गई। प्रतिमा (खड़गासन) व अन्य खड़गासन प्रतिमा पर वि.सं. 1130 व 1144 का लेख उत्कीर्ण है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार वि.सं. 2016 में हुआ।

मंदिर में एक काउसग्गीय प्रतिमा पर वि.सं. 1144 ज्येष्ठ वदि 4 का लेख है। इससे यह स्पष्ट है कि यह शायद इसके पहले का है। कुछ प्रतिमाओं पर वि.सं. 1130 ज्येष्ठ शुक्ला 5 का लेख विद्यमान है। इससे इसकी प्राचीनता दिखाई देती है। लौटाणा से जीवित स्वामी दियाणा तीर्थ का पहाड़ी तीर्थ का पहाड़ी में शार्ट रास्ता है। भोमिया जानकार साथ में रखना जरूरी है।

मंदिर के परकोटा के भीतर बड़ी पोल है, उससे भीतर प्रवेश होकर बडे खुले चौक में होकर जाना पड़ता है। मंदिर में सभामण्डप, शृंगार चौकी रंगमण्डप व छोटे–बड़े गुम्बज है। मूलनायक के दोनों ओर श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा विराजित है। पहाड़ी की तलहटी पर ग्राम से बाहर स्थित है। यहां पर कोई जैन बस्ती नहीं है। जनवाणी के अनुसार नांदिया निवासी सेठ श्री जाबड़ द्वारा पालीताणा का बारहवाँ जीर्णोद्धार कराया था। जीर्णोद्धार पूर्ण होने पर वापस लौटते समय यह प्रतिमा शत्रुंजय से वापस लेकर आए तो यहां (लोटणपुर) में स्थापित की।

पूर्व में 125 मकान जैन के थे वर्तमान में केवल 4 परिवार है। **मूलनायक पर सं. 1846 का लेख है।** मंदिर के साथ एक छोटी धर्मशाला है। भोजनशाला नहीं है। मंदिर की देखरेख श्री जैन पेढ़ी लोटाणा द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र : 02971–220115

ऋषभदेव भगवान के मंदिर में दाईं ओर काउस्सग्गीय का लेख

संवत् 1130 ज्येष्ठशुक्लपंचम्यां श्रीनिर्वृतककुले श्रीमदाम्रदेवाचार्यगच्छे कोरेस्व(श्व)रसुत दुल्ल(र्ल)भश्रावकेणेदं मुक्तये कारितं जिनयुग्ममुत्तमं।।

बाईं ओर काउस्सग्गीय मूर्ति पर लेख

(संवत् 1130) ज्येष्ठशुक्लपंचम्यां श्रीनिर्वंतककुले श्रीमदाम्रदेवाचार्यगच्छे कोरेस्व(श्व)नसुत दुर्लभ (श्रावकेणे)दं मुक्तये कारितं जिनयुग्ममुत्तमम्।।

गूढ़मण्डप के दाईं ओर काउस्सग्गीय नीचे का लेख

संवत् 1130 ज्येष्ठ शुक्लपंचम्यां तिहे (निर्वृ)तककुले श्रीमदा.... ....

गूढ़मण्डप के दाईं ओर मूर्ति का लेख

ऊँ ।। संवत् 1144 जेष्ट(ज्येष्ठ) वदि 4 श्रीत(नि)र्वृतककुले श्रीमदाम्रदेवाचार्यीयगच्छे लोटाणकचैत्ये प्राग्वाटवंशोद्भवः यांयश्रेष्ठिस(हितेन) आहिल श्रेष्ठिकि(कृ)तं आसदेवेन मोल्यः(?) श्रीवीरवर्द्धमानसा(स्वा)मिप्रतिमा कारिता।।

गूढ़मण्डप में स्थापित पादुका जोड़ी पर लेख

सं(0) 1869 पोष सुद 13 गुरौ श्रीऋषभ्ददेवजीपादुकेभ्यो नमः।। भ। श्रीविजयलक्ष्मीसूरिभिः(:) प्रतिष्टितं।। लोटीपुरपट्टणे।। श्रीरस्तु।।

आचार 5 प्रकार के होते हैं

1. ज्ञानाचार 2. दर्शनाचार्य 3. चारित्राचार 4. तपाचार 5. वीराचार्य

श्री महावीर भगवान का मंदिर, वीरवाड़ा

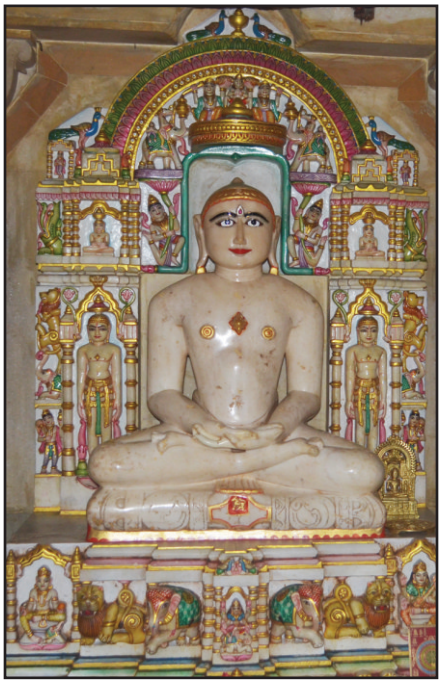

यह शिखरबंद मंदिर सिरोही रोड रेलवे स्टेशन से 9 व सिरोही मुख्यालय से 13 किलोमीटर बामनवाड जी से 2 किलोमीटर दूर गाँव के अंतिम किनारे पर पहाड़ी की तलहटी पर स्थित है।

वीरवाड़ा ग्राम का प्राचीन नाम वीरपल्ली था ऐसा कहा जाता है कि यहाँ पर प्राचीनकाल में वीर सिपाही अधिक थे अर्थात वीर सैनिकों की छावनी रही थी, इसलिए इसका नाम वीरवाड़ा कहा जाता है।

कोटरा ग्राम के जैन मंदिर वि.सं. 1208 एक शिलालेख में ''वीरपल्ली'' ग्राम के एक श्रेष्ठि ने जैन मंदिर बनवाया ऐसा उल्लेख है। यह वीरपल्ली ही वीरवाड़ा हो सकता है।

यह मंदिर अति प्राचीन है। मंदिर के एक स्तंभ पर

उत्कीर्ण शिलालेख के आधार पर मंदिर का जीर्णोद्धार वि.सं. 1410 में हुआ था। वि.सं. 1499 में कवि मेघ द्वारा रचित ''तीर्थमाला'', वि.सं. 1745 में श्री शिलविजयजी द्वारा रचित ''तीर्थमाला'' एवं वि.सं. 1755 में श्री ज्ञानविमलसूरि जी द्वारा रचित ''तीर्थमाला'' में महावीर भगवान का मंदिर का उल्लेख है। ऐसा भी कहा जाता है कि यह महावीर भगवान के समकालीन तीर्थ है। अतः यह मंदिर 2500 वर्ष प्राचीन है। इसी मंदिर में कलात्मक परिकर युक्त एक प्राचीन प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यहां महावीर भगवान का विचरण स्थल रहा है।

मंदिर में रंगमण्डप, सभामण्डप, श्रृंगार चौकी, गुम्बज आदि बने हुए हैं।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा वैशाख शुक्ला 6 को चढाई जाती है।

मंदिर में धर्मशाला है, भोजन शाला उपलब्ध नहीं है।

मंदिर की देखरेख श्री विमलनाथ भगवान जैन पैढ़ी वीरवाड़ा द्वारा की जाती है।

यह रश्मि सूरि जी म.सा. व श्री हेमेन्द्र सूरिजी म.सा. (त्रिस्तुति) व श्री पद्मसूरि जी की जन्मस्थली है।

बाहर रायण का वृक्ष है जो बहुत प्राचीन है, किन्हीं कारणों से इस वृक्ष को काटने लगे तो, नाग प्रगट हुए और फण द्वारा इन्कार किया।

मंदिर का जीर्णोद्धार करा वि.सं. 2000 में श्री पद्मसूरिजी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुआ व प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। सम्पर्क सूत्र : 02971–237138

पुरुषार्थ

1. जीवों को मोक्ष मार्ग में लगाना ही दया है।
2. ये दया के पात्र बनने का नहीं, पात्रों पर दया करने का मार्ग है।
3. राग–द्वेष का नाम क्रुर भाव है और वीतरागता का नाम दया
4. जो पात्रों पर दया नहीं करते वे स्वयं दया के पात्र बन सकते हैं
5. सरलता, समृद्धिता की जनक है।
6. बड़े व्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी लघुता, सरलता ।
7. ज्ञानी अर्थात वितरागी और वितरागी अर्थात ज्ञानी ।

श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, वीरवाड़ा

यह विशाल भव्य शिखरबंद बावन जिनालय का द्विमंजिला मंदिर है। यह वीरवाड़ा के महावीर भगवान के मंदिर के पास ही स्थापित है। मंदिर की सभी देवरियों पर शिखर निर्मित हैं।

मंदिर में रंगमण्डप, सभामण्डप, शृंगार चौकी, आकर्षक गुम्बज बने हुए हैं। कुल देवरियाँ 40 है लेकिन शिखर 47 हैं कुछ देवरियों में 3 तीन प्रतिमा है– उसके सहित 47 है। इस मंदिर में श्री सम्भवनाथ भगवान की आकर्षक प्रतिमा स्थापित है। पूर्व में मूलनायक के रूप में प्रतिष्ठित थे।

यह मंदिर 400 वर्ष प्राचीन व द्विमंजिला है। ऊपर की मंजिल में श्री विमलनाथ भगवान विराजमान है। जिसकी प्रतिष्ठा वि.सं. 2055 ज्येष्ठ सुदि 3 को श्री पद्मसूरि जी द्वारा की गई व श्री विमलनाथ की प्रतिष्ठा वि.सं. 2018 में सम्पन्न हुई । वर्तमान में श्री संभवनाथ व विमलनाथ भगवान मूलनायक के रूम में विराजित है। इसके पूर्व श्री धर्मनाथ भगवान विराजित थे। इस मंदिर की

वार्षिक ध्वजा वैशाख शुक्ला 6 को चढ़ाई जाती है। सम्पर्क : 97310 87391, 969475238

इस मंदिर की देखरेख श्री विमलनाथ भगवान जैन पैढ़ी, वीरवाड़ा द्वारा की जाती है।

विशेष : यह पूर्व में आदीश्वर भगवान का मंदिर होने का उल्लेख आता है। मूलनायक परिकर युक्त है। यह मंदिर वि.सं. 1475 से बनाने का एक लेख है कि डिंडला ग्राम के रहने वाले पोरवाड़, पाल्हा ने यह मंदिर बनवाया और श्री वीरप्रभसूरि द्वारा प्रतिष्ठा कराई। किन्हीं कारणों से विमलनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान कराई। इसके पूर्व आदिनाथ भगवान, धर्मनाथ भगवान, श्री सम्भवनाथ भगवान मूलनायक थे। मंदिर का जीर्णोद्धार वि.सं. 2055 ज्येष्ठ सुदि 3 को सम्पन्न हुआ। मूलनायक की प्रतिमा पर एक मोर का लेख है।

पूर्व में आदिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमा जो सभा मण्डप के बांई ओर स्थापित है संभवतः वो ही मूलनायक रहे होंगे। महावीर स्वामी जैन मंदिर गांव के बाहर बामणवाड़जी की तरफ है। दर्शन करना हो तो पेढ़ी से चाबी साथ लेकर पधारें।

श्री महावीर भगवान के मंदिर का जीर्णोद्धार का लेख

सं0(0) 1410 वर्षे श्रे0 महणा भा0 कपूरादे पु0 जगमालेन भा0 मुक्तादे पु0 कडूया देल्हासमं वीरवाडाग्रामे श्रीमहावीरचैत्ये उद्धारः कारितः कछोलीवालगच्छे भ0 श्रीनरचंद्रसूरिपटे(ट्टे) श्रीरत्नप्रभूसरीणामुपदेशेन प्रतिष्टितः ।।मंगलं।। प्राग्वाटज्ञातीयः।।

श्री आदिनाथ भगवान के मंदिर के गूढ़मण्डप के दाईं ओर के स्तंभ पर लेख

संवत् 1475 वर्षे माघ सुदि 11 शनौ डींडिल (ग्राम) श्री महावीरगोष्ठिक, श्रेष्ठिद्रोणीयासंताने प्राग्वाटज्ञातीय व्य0 कुंरा भार्या रामी पुत्र माल ।भार्या जीवल पुत्र पाल्हाकेन मूलि(ल)नायक श्रीआदिनाथप्रतिमालंकृतोऽभिनवः प्रासादः कारितः।। प्रतिष्टितो वृ(बृ)हदच्छीयपिष्पलाचार्य श्रीशांतिसूरिसंताने भ0 भ0 वीरदेवसूरिपट्टे श्रीवीरप्रभसूरिभिः।। छ।। श्रीर्भवतु।। शुभं भूयात् ।। आचंद्रार्कं यावत्।।

श्रीवीरदेवसूरीशपट्टंभोजदिवाकरः । श्रीवीरप्रभसूरींद्राः जयंतु जगतीतले।।
श्रीआदिनाथचैत्येऽस्मिन् श्राद्धप्रासादकारिते।
मंडपं कारयामाषुः (सुः)श्रीवीरप्रभसूरयः।। संवत् 1476 वर्षे।

धातु की चतुर्विंशति मूर्ति का लेख

संवत् 1521 वर्षे ज्येष्ट वदि 12 गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय लघुसंताने श्रे0 कान्हा भा0 कील्हणदे सुता 3 सं0 सालिग भा0 सारू सं0 सूना भा0 वर्जू सं0 मुझा भा0 गोरी माल्हणदे मत्री0 देवाः स्वकुटुंबश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्टितं.... ....गुर(रु)श्रीविजयरत्न(त्नेन) ....।। श्रे0 बादा भा0।।

श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर, तेलपुर

यह शिखरबंद मंदिर सिरोही से सिरोही रोड़ मार्ग पर नया सनवाड़ा गांव से 2 किलोमीटर दूर स्थित है। पूर्व में यहां महावीर भगवान का मंदिर था जो वि.सं. 1521 का निर्मित है। यहां पर प्राचीन मंदिर है लेकिन इसमें प्रतिमा नहीं है। यह मंदिर बंद है। वि.सं. 937 में आचार्य श्री उद्योतनसूरि जी ने वटवृक्ष के नीचे इसी स्थान पर अपने शिष्यों को आचार्य पदवी से अलंकृत कर बड़गच्छ की स्थापना की। यहां पर छोटी धर्मशाला है।

यहां पर जैन बस्ती नहीं है लेकिन किसी समय में अच्छी संख्या में जैन रहते होंगे। एक टेकरी पर आदिनाथ भगवान का मंदिर था। मूलगभारा, शिखर बने हुए है। मूलनायक का परिकर भी था। प्रतिमा पर कोई लेख नहीं है लेकिन परिकर की गादी पर सं. 1524 माघ सुदि 13 का लेख है जिसके आधार पर आदिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा हुई थी। लेख इस प्रकार है – सं. 1521 माघ सुदि 13 गुरौ तेलपुरे श्री आदिनाथ परिकर प्रतिष्ठित तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरि ।

मूलनायक श्री आदीनाथ के परिकर पर लेख

सं(0) 1521 माघ शु0 13 गुरौ तेलपुरे श्रीआदिनाथपरिकरः प्रतिष्टितः।। तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः।

शास्वत मंदिरों की संख्या

8 करोड़ 57 लाख, 282 शास्वत मंदिर है, सम्भव है इससे अधिक हो गए हो।

लोक तीन है :

1. **उर्ध्व लोक (स्वर्गलोक)**
2. **अधोलोक (पाताललोक)**
3. **भिर्च्छालोक (मृत्युलोक)**

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, नया सनवाड़ा

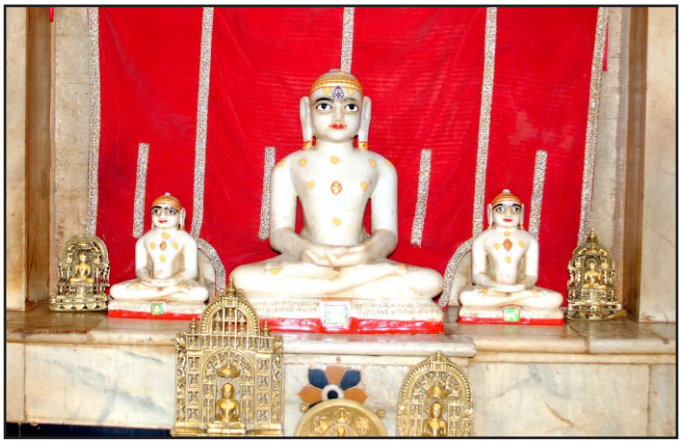

यहां पर प्राचीन जैन मंदिर था। मंदिर का मूलगभारा, शिखर, घूमट आदि है। मूल गभारा का पबासन उठा दिया लगता है। मूलनायक महावीर भगवान की प्रतिमा को ब्राह्मणवाड़ जी ले गए बाद में वहां से उदरा गांव में मूलनायक के रूप में विराजित है। इस पर सं. 1499 फाल्गुन व. 5 का लेख है। यहां की बस्ती साणवाड़ा (नया) में रहने लगी।

वर्तमान में श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा मूलनायक के रूप में विराजित है। कहा जाता है कि यह मंदिर 350 वर्ष पूर्व का है। साथ भी यह भी कहा जाता है कि यह मंदिर पूर्व में पुराना सानवाड़ा में स्थापित था लेकिन वह मुगलकालीन आक्रमण व अन्य कारणों से सणवाड़ा नष्ट हो गया, वहां कि बस्ती वाले यहां आकर बस गये जिससे यह नया सनवाड़ा कहलाता है।

मूलनायक पर 1123(2) का लेख है यहां पर उपाश्रय है, न्याति नोहरा (लघुगौत्र) व भोजनशाला, धर्मशाला उपलब्ध है। यहां की व्यवस्था कल्याण परमानंद जी की पेढ़ी सिरोही द्वारा की जाती है।

श्री महावीर भगवान का मंदिर बालदा

यह शिखरबंद मंदिर सिरोही से सिरोही रोड़ मार्ग पर सिरोही से 5 किलोमीटर दूरी पर बालेश्वर हनुमान मंदिर से आगे मुख्य सड़क पर बालदा गावं का द्वार बना हुआ है। वहां से 2 किलोमीटर दूर गांव में स्थित है। इस गांव का प्राचीन नाम बलदेव नगर होना बताया है। यहां के जैनी लोग किन्हीं कारणों से अन्यत्र बस गए तो वे लोग वहां पर बालदा वाले या बाल्दीया कहलाते है। वि.सं. 1381 में महाराव लूम्भा जी (लूणभकर्ण) के समय चंद्रावती नगरी व बसंतगढ़ नष्ट होने से वहां से सुरक्षित स्थान पर जाने के बैलगाड़ी में वहां के लोगों के साथ प्रस्थान किया क्योंकि गुजरात के द्वारा निरंतर आक्रमण हो रहे थे, वहां से रवाना होकर बालदा ग्राम सुरक्षित समय पर रहने लगे। यह गांव कई वर्षो तक सिरोही की राजधानी रही थी।

नगरवासी अपने साथ अपने इष्टदेव बाबा, माताजी की मूर्तियां भी लाए और यहां लाकर स्थापित कराई। वे आज भी स्थापित है। जिनको बाबा व माताजी कहा जाता है जैन लोग मातुंग यक्ष व सिद्धियिका देवी पुकारते है। वर्तमान में एक भी जैन श्रावक निवास नहीं करता है।

यह मंदिर बावन जिनालय जैसा है, मूलनायक की प्रतिमा के दोनों ओर श्री शांतिनाथ व श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा विराजित है। मूल गभारे के बाहर सिद्धायिका यक्षिणी व मांतुग यक्ष विराजित है।

पूर्व में शांतिनाथ भगवान का मंदिर था जो वि.सं. 1500 के लगभग बना हुआ है, ऐसा उल्लेख है।

मूल गभारे के बाहर रंगमण्डप के दोनों ओर तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा है। कुल 11 प्रतिमाए (मूलनायक सहित) हैं

मंदिर में गभारा रंगमण्डप, सभामण्डप, श्रृंगार चौकी 27 स्तम्भ बने हुए है। मंदिर के साथ धर्मशाला, भोजनशाला उपलब्ध है। इस मंदिर की देखरेख सेठ कल्याणजी परमानन्द जी की पेढ़ी सिरोही द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र : 02972–232525

यहां 12 वीं शताब्दी का शिव मंदिर है। मेन हाईवे से 1 किलोमीटर अन्दर है।

श्री महावीर भगवान के मंदिर के गूढ़मण्डप के मुख्य दरवाजा पर लेख

।।ऊँ।। सं(०) 1485 वर्षे ज्येष्ट सुदि 7 भोमे कच्चदोलीवालगच्छे पूर्णिमापक्षे0 प्राग्वाटज्ञातीय व्य0 थिरपाल भा0 देदी पु0 6 नरपाल हापा तिहुणा काल्हू केल्हा पेथड समस्तगोष्टि(ष्ठि)कसहितेन वाचनाचार्यगुणभद्रेण पूर्वज व्य0 बंभदेवकारितप्रसादे उद्धारः कारितः।।तनदु।। तिहुणा पु0 वीकम भ्रातृ साढा सुत काजा चांपा सूरा सहसा मं0 पेथड भा0 जाणी पुत्र थडसी मं0 ऊदा मं0 हापा पु0 रामा पु0 राउल मोल्हा कचा मं0 वील्हा पु0 हरभा हरपाल एभिः श्रीमहावीरबिंबं कारितं।। प्रतिष्टितं श्रीरत्नप्रभसूरीणां पट्टे भ0 श्रीसवाणंदसूरीणां उपदेशेनेति भद्रं।।

मंदिर की आरास की मूर्ति का लेख

संवत् 1578 माह वदि 8 रवौ महिसाणावास्तव्य प्रागवाअज्ञातीय लघुशाखा व्य0 पासा भा0 प्रीमलदे पु0 नाथाकेन भा0 लषमादे पुत्रअचलदिकुटुंबयुतेन श्रीमुनिसुव्रतबिंबं कारितं। प्रतिष्टितं तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः।। श्रीरस्तु।।श्रीः।।

मंदिर में एक धातु की मूर्ति का लेख

(१) ।।ऊँ।। सं0 1697 वर्षे भा0 वदि 13 बुधे श्रीरूपी शान्तिनाथबिंबं कारापितं श्रीः।

(2)कुंथुनाथ .... सहजू.... ....

(३) सं0 1942 वर्षे ....

सिरोही का इतिहास

सिरोही राजस्थान राज्य का जिला मुख्यालय है। यह नगर सिरोही रोड़ रेल्वे स्टेशन से 25 किलोमीटर दूर स्थित है। यह नगर श्री शिवभाण के पुत्र सेंसमलजी चौहान ने वि.सं. 1482 में बसाया। यह जैन बाहुल्य जनसंख्या का नगर रहा है।

यहाँ पर 23 जैन श्वेताम्बर मंदिर है जिसके फलस्वरूप इस नगर को मंदिरों की नगरी या देवनगरी व लघु शत्रुंजय कहा गया है। मंदिरों की अधिकता के कारण इस नगर को अर्द्ध शत्रुंजय तीर्थ भी कहा जाता है। यहाँ पर यह विशेषता भी है कि यहाँ एक ही लाईन में 14 जैन मंदिर स्थित है जो मंदिर गली के नाम से जाना जाता है।

सिरोही के मंदिरों की प्राचीनता के बारे में वि.सं. 1745 में श्री शीलविजय जी म.सा. द्वारा रचित ''तीर्थमाला'', मेह कवि द्वारा वि. सं. 1499 में रचित''तीर्थमाला'' व श्री महिमा विजय जी म.सा. द्वारा वि.सं. 1622 में रचित तीर्थमाला में वर्णन किया है।

मुनि श्री महिमा विजय जी म.सा. ने यह भी वर्णन किया है कि ग्यारह मंदिरों में कुल 4071 प्रतिमाएँ स्थापित होना बताया हैं।

इन प्राचीन कलात्मक मंदिरों व एक पंक्ति में स्थापित मंदिरों का वर्णन बड़े ही आकर्षक ढंग से उपकेश गच्छ के अन्तिम मुनि श्री ज्ञानसुंदरजी ने अपनी पुस्तक "पार्श्वनाथ भगवान की परम्परा का इतिहास'' में किया है।

इसके अतिरिक्त सं. 1755 में ज्ञानविमलसूरिजी ने सिरोही के मंदिरों का विवरण ''अपनी यात्रा'' में वर्णन किया है।

इस नगर में जगद्गुरू श्री हीरसूरीश्वरजी म.सा. को वि.सं. 1610 में आचार्य की पदवी से अलंकृत किया था।

सिरोही की स्थापना वि.सं. 1482 में स्थापना हुई इसके पश्चात् समय समय पर विकास होता रहा। इसके पूर्व एक छोटा कस्बा खोबा नाम से जाना जाता था जिसको राव लूम्भा ने अपनी राजधानी बनाई लेकिन राजधानी के लिए उपयुक्त स्थान न होने से उनके पुत्र सहसमल वर्तमान ने सिरोही को राजधानी बनाया।

इस मंदिर की प्रतिष्ठा आचलगच्छ के आचार्य द्वारा सम्पन्न हुई इसलिए इस मंदिर का नाम आंचलिया आदीश्वर रहा।

सिरोही में स्थापित मंदिरों का वर्णन निम्न प्रकार है :–